

प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

निर्दलीय प्रकाशन का
स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७
शिवाजी नगर, भोपाल

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय

अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.com पर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
 फिर क्लिक करें

e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
 साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
 और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com

वर्ष-५४/१६ अंक- ६४

भोपाल, ११ सितंबर, डाक १२ सितंबर २०२६

भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित

पृष्ठ - ८

मूल्य १+१/- (संप्रेषण/स्वैच्छिक)

**युद्ध विरोधी पाठ पढ़ाने वालों से विनती है ।
पहले खुद शांति पथ पर चलना सीखो तो ।।**

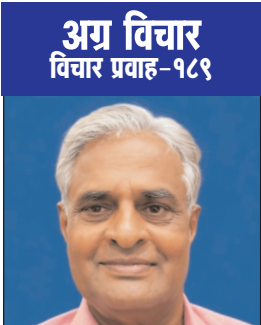
आज पूरे विश्व में अशांति व्याप्त है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि रूस और यूक्रेन के मध्य लंबे समय से युद्ध जारी है जबकि २८ फरवरी २०२६ को अमेरिका और इजराइल ने ईरान पर हमला बोला जो दो माह के अंतराल को छोड़कर आजतक जारी है। दूसरी ओर कई देशों में आतंकवाद चल रहा है जिसमें यमन और बगदाद सर्वाधिक प्रभावित हैं।

महात्मा गांधी ब्रिटेन में कानूनी पढ़ाई पूरी कर दक्षिण अफ्रीका आ गए थे जहां उन्होंने ब्रिटिश आततायियों के विरुद्ध ११ सितंबर १९०६ को सत्याग्रह आरंभ किया। वे अपने आंदोलन में सफल रहे जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों को दक्षिण अफ्रीका के लोगों को शांतिपूर्वक जीने और अभिव्यक्ति का अधिकार देना पड़ा।

स्वदेश लौटकर गांधीजी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा चलाए जा रहे स्वाधीनता आंदोलन को भरपूर समर्थन दिया और जब अंग्रेज भारत को स्वाधीनता देने तैयार नहीं हुए तो उन्होंने यहां भी सत्याग्रह का सहारा लिया और संत विनोबा भावे वर्ष १९४० में पहले युद्ध विरोधी सत्याग्रही बने जिस कारण उन्हें यादवदा जेल में डाल दिया गया किंतु वे झुके नहीं। इसके पूर्व १९२३ में नागपुर के झंडा का सत्याग्रह में भी विनोबा भाग लिया था जिसके कारण उन्हें अकोला जेल में रखा गया। जेल से लौटकर उन्होंने 'महाराष्ट्र धर्म' पत्रिका निकाली जिसमें वे ब्रह्मविद्या और श्रमनिष्ठा पर जोर देते थे। इसी वर्ष गांधीजी ने सांप्रदायिक एकता के लिए कार्यक्रम शुरू किया तथा १९२४ में वायकोम (केरल) में हरिजनों के मंदिर प्रवेश हेतु चल रहे आंदोलन में भाग लेने हेतु भेजा तो वहां विनोबा ने सत्याग्रह शुरू किया जो सफल रहा। बाद में १९३२ में भी उन्हें आंदोलन के कारण जेलगांव से पकड़कर धुलिया जेल में डाल दिया गया।

दरअसल विनायक को विनोबा नाम तो गांधीजी ने दिया था लेकिन इसके पूर्व जब उन्हें अपने परिवार व समाज में विनायक नाम से जाना जाता था तब युवा अवस्था से ही वे बंग-भंग आंदोलन के क्रांतिकारियों से प्रभावित होकर मन ही मन आंदोलित रहते थे। विनायक मां और मां के चित्त में विनायक अनन्य थे। वे धार्मिक विनायक को साथ ले जाती थीं। उन्होंने एक बार विनायक को आंदोलनकारी भी इसी तरह का जीवन जीना विनायक को गीता का पारायण पारायण कराते हुए एक थक विदुषे भी सुलभ गीता तैयार करना है तब उनकी १५ वर्ष थी।

जेल प्रवास के दौरान विनोबा उर्फ विनायक कैदियों के बीच



कैलाश आदमी

विनोबा जी का जन्म ११ सितंबर, १८९५ को महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले की पेन तहसील के एक छोटे-से गांव गागोदा में हुआ था। उनका मूल नाम विनायक नरहरि भावे था। मां रुक्मिणी बाई (रखुमाई) इन्हें प्यार से 'विन्या' कहकर पुकारती थी। विनोबा के पिता का नाम नरहरि शम्भूराव भावे था। 'विनोबा' गांधी जी का दिया हुआ नाम था, जिससे पूरी दुनिया उन्हें जानती है।

विनोबा जी का निधन
१५ नवंबर १९८२ को
महाराष्ट्र के वर्धा जिला
स्थित धाम नदी के
किनारे परमधाम आश्रम
पहुनार (पवनार) में
हुआ।

गीता पर प्रवचन देते थे तथा जेल से रिहा होने के बाद जमुनालाल बजाज ने उनके प्रवचनों पर आधारित पुस्तक 'गीताई' छपवाई जिसकी ५० लाख प्रतियां लोगों तक पहुंची और इस तरह गीता जीवन भर विनायक की मां बनी रही।

विनोबा जी जीवनभर गांधी प्रणीत एकादश व्रतों का पालन करने के साथ ही गांधीजी की मंशा के अनुरूप सर्वोदय समाज की सेवा में लगे रहे और सर्वोदय 'शब्द' को पूर्ण सामाजिक संकल्पना का रूप देने में जुटे रहे। सर्वोदय एक ऐसे समाज की कल्पना करता है जो हिंसा अहिंसा और सत्ता के विकेंद्रीकरण पर आधारित हो। इसके मूल में या केंद्र बिंदु स्वरूप मनुष्य है और सर्वोदय दर्शन के अंतर्गत गांधीजी पूरे विश्व में दलीय व्यवस्था के विपरीत गैर दलीय संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के हामी थे। इसके साथ ही वे गरीबी-अमीरी के अंतर को पाटने के लिए न्यासी भाव पर जोर देते थे। विनोबाजी ने गांधीजी की हत्या के बाद भूदान और ग्राम स्वराज के माध्यम से इस भ्रष्टान और अमलीजामा पहनाने का भरपूर प्रयास किया।

गाय देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है और आज भी है। इसे दृष्टिगत रखते हुए विनोबा जी ने कहा- मैं यह मानता हूँ कि मनुष्य अब पशुओं का वध नहीं करेगा। पशुओं को अपना भोजन नहीं मानेगा। भारत का यह एक विशेष संदेश है जो यहाँ की ब्रह्मविद्या में से निकला है और यह संदेश सभी लोगों द्वारा अपनाए जाने जैसा है। मानव की मानवता के विकास के लिए, मानव की परिपूर्णता के लिए आवश्यक है कि मानव माँसाहार छोड़ दे लेकिन इसके लिए किसी के साथ ज्यादातर करने की आवश्यकता नहीं है वरन प्रत्येक को प्रेमपूर्वक समझाने की आवश्यकता है। मैंने अलीगढ़ में कहा था कि इस्लाम को कभी न कभी तो माँसाहार छोड़ना ही पड़ेगा। मैंने अपनी बात प्रेमपूर्वक कही और उन लोगों ने बड़ी शांति और प्रेम से मेरी बात सुनी।

विनोबा ने पवनार आश्रम का नाम ब्रह्मविद्या के साथ ही वहां नाना प्रकार के प्रयोग किए। इस हेतु न में महिलाओं को बराबरी का स्थान दिए जाने की और आश्रम में केवल महिलाओं को स्थान दिया। वे गांधी हत्या के बाद भी अत्यंत श्रद्धा व विनम्र भाव से कार्यक्रम को मूर्त रूप देने में लगे रहे।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियाँ—

यूद्ध विरोधी पाठ पढ़ाने वालों से विनती है।

पहले खुद शांति पथ पर चलना सीखो तो ।।

स्वराज्य की अहिंसक राह

जाए। सत्याग्रह में तालीम का अर्थ है, रचनात्मक कार्यक्रम या तामीरी काम।

रचनात्मक कार्य हिंसा, द्वेष, अलगाव, शोषण, बेरोजगारी और सामाजिक रिक्तता का विकल्प प्रस्तुत करता है। समाज को स्वावलंबी, सक्रिय, उत्पादक और सुदृढ़ बनाने के साथ-साथ उसे जोड़ने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में समता, सक्रियता, कुशलता, समझदारी, साझापन, जागरूकता, निर्भयता, शिक्षा और संगठन को बढ़ावा दिया जा सकता है। रचनात्मक कार्यों का एक महत्वपूर्ण पक्ष समाज के प्रत्येक घटक से संपर्क और संवाद स्थापित करना है। इसके माध्यम से लोगों के बीच बातचीत का सिलसिला शुरू होता है। किसी समाज में प्रवेश का यह ऐसा रास्ता है, जहां सेवा और संवाद एक-दूसरे से जुड़े हैं। लोगों की वास्तविक समस्याओं को समझने और उन्हें समाधान की प्रक्रिया में सहभागी बनाने का अवसर मिलता है।

गांधी ने रचनात्मक कार्यक्रम की सूची में कौमी एकता, अस्पृश्यता-निवारण, शराबबंदी, खादी, ग्रामोद्योग, गांव की सफाई, नई या बुनियादी तालीम, बड़ों की तालीम, स्त्रियां, आरोग्य के नियमों की शिक्षा, प्रांतीय भाषाएं, राष्ट्रभाषा, आर्थिक समानता, किसान, मजदूर, आदिवासी, कोढ़ी और विद्यार्थी सहित 18 विषयों को रखा। पशु सुधार (गौ रक्षा), सविनय कानून-भंग और कांग्रेस को भी 'रचनात्मक कार्यक्रम-उसका रहस्य और स्थान' में शामिल किया।

इस सूची को देखने से गांधी की सामाजिक दृष्टि की व्यापकता समझ में आती है। उनके लिए राष्ट्र केवल राजनीतिक संस्था नहीं था। उसमें किसान, मजदूर, आदिवासी, स्त्री, विद्यार्थी, गरीब, बीमार और समाज के वे लोग भी शामिल थे, जिन्हें मुख्यधारा अक्सर पीछे छोड़ देती है। इसीलिए रचनात्मक कार्यक्रम का लक्ष्य कानून की किसी एक हिस्से का सुधार नहीं, बल्कि समग्र सामाजिक



रमेश चंद शर्मा

परिवर्तन था ।

रचनात्मक कार्यक्रम की एक विशेषता यह भी है कि गांधी ने इसे अंतिम या अपरिवर्तनीय सूची नहीं माना। उन्होंने इसकी प्रस्तावना में स्पष्ट किया था कि इसमें शामिल किये गये विषय किसी खास मिसाल से से नहीं लिखे गये हैं। निश्चय ही उन्हें उनके महत्व के अनुसार स्थान नहीं मिला है। किसी खास विषय को, जो पूर्ण स्वराज्य की रचना की दृष्टि से अपना महत्व रखता है, इस कार्यक्रम में जगह नहीं मिली है, तो उन्हें समझ लेना चाहिए कि वह जान-बूझकर नहीं छोड़ा गया है। वे बिना हिचकियाये उसे मेरी सूची में शामिल कर लें और मुझे बता दें। मेरी यह सूची पूर्ण होने का दावा नहीं करती; यह तो महज मिसाल के तौर पर पेश की गयी है।

इस कथन में गांधी के विचार की लचक और व्यावहारिकता दिखाई देती है। रचनात्मक कार्यों का चयन समय, स्थान, क्षेत्र, माहौल, वातावरण, अपनी क्षमता और आवश्यकता के अनुसार किया जा सकता है। विचार-विमर्श, चिंतन-मनन और स्थानीय जरूरतों को ध्यान में रखते हुए नए कार्यों को इसमें शामिल करने की गुंजाइश बनी रहती है। यही बात आज के संदर्भ में रचनात्मक कार्यक्रम को प्रासंगिक बनाती है। गांधी के समय जिन समस्याओं के समाधान के लिए खादी, ग्रामोद्योग, नई तालीम या गांव की सफाई जैसे कार्यक्रम सामने आए थे, आज उनके रूप बदल सकते हैं, लेकिन उनकी मूल भावना बनी रह सकती है। स्थानीय रोजगार, स्वावलंबन, श्रम की प्रतिष्ठा, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक समता और पर्यावरण संरक्षण जैसे सवाल को आज के रचनात्मक कार्यक्रम का हिस्सा बनाया जा सकता है।

गांधी का जोर इस बात पर था कि परिवर्तन बाहर से थोपा न जाए, बल्कि समाज की अपनी भागीदारी से पैदा हो। रचनात्मक कार्य इसी भागीदारी का रास्ता खोलता है। इसमें व्यक्ति केवल किसी अभियान का दर्शक नहीं रहता, बल्कि अपने जीवन और समाज को बदलने की प्रक्रिया में

सक्रिय भूमिका निभाता है।

आज हिंसा, द्वेष, सामाजिक अलगाव, आर्थिक असमानता, बेरोजगारी और पर्यावरणीय संकट जैसी चुनौतियाँ हमारे सामने हैं। ऐसे समय में रचनात्मक कार्य को केवल गांधी के समय की राजनीतिक रणनीति मानना उसके व्यापक अर्थ को सीमित करना होगा। इसका मूल संदेश आज भी यही है कि समाज को बदलने के लिए प्रतिरोध के साथ निर्माण जरूरी है।

‘रचनात्मक कार्यक्रम- उसका रहस्य और स्थान’ इस दृष्टि को समझने की महत्वपूर्ण पुस्तक है। 64 पृष्ठों की यह पुस्तक आकार में छोटी है, लेकिन गांधी के सामाजिक और राजनीतिक चिंतन को समझने के लिए उपयोगी है। गांधी विचार साहित्य व्यापक स्तर पर उपलब्ध है। उसके स्वाध्याय से रचनात्मक कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं को समझा जा सकता है।

गांधी को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के नेता के रूप में देखना उनके विचार को अधूरा समझना होगा। उनका स्वराज्य व्यक्ति की स्वतंत्रता, समाज की समता, आर्थिक न्याय, श्रम की प्रतिष्ठा और अहिंसक सामाजिक व्यवस्था से जुड़ा था। रचनात्मक कार्य इन सभी को जोड़ने वाला माध्यम था।

इसलिए आज गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम को पढ़ते हुए सबसे जरूरी सवाल यह है कि हमारे समय के रचनात्मक कार्य कौन-से हों। किन कामों से समाज में स्वावलंबन बढ़ेगा, किनसे अलगाव कम होगा, किनसे अंतिम व्यक्ति की भागीदारी सुनिश्चित होगी और किनसे हिंसा के स्थान पर सहयोग की संस्कृति विकसित होगी—इन सवालों पर विचार करना गांधी के रचनात्मक चिंतन को वर्तमान से जोड़ना है।

स्वराज्य केवल सत्ता परिवर्तन से हासिल नहीं होता। वह समाज के भीतर निरंतर रचना की प्रक्रिया से आता है। गांधी के लिए रचनात्मक कार्य इसी प्रक्रिया का आधार था। संघर्ष अन्याय के विरुद्ध रास्ता खोलता है, लेकिन निर्माण ही उस रास्ते पर स्वराज्य की वास्तविक यात्रा पूरी करता है। गांधी विचार के स्वाध्याय और चान्नात्मक कार्यों के प्रयोग से इस दृष्टि को अपने समय में समझना और आगे बढ़ाना ही उनके प्रति सार्थक श्रद्धांजलि हो सकती है।

- नई दिल्ली

संस्थापक संपादक
-कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी'
(९४२४४३४०१)

सलाहकार/संरक्षक- सेठ रामनिवास गुप्ता, कविता मल्होत्रा (नई दिल्ली), मधुबाला पांडेय (भोपाल)

मुख्य संरक्षक
पवन कुमार जैन (बदनावर)

प्रबंध संपादक
अशोक निर्मल

साहित्य संपादक-
सरिता गर्ग 'सरि' (जयपुर)

स्वामी निर्दलीय प्रकाशन एवं स्वाध्याधिकारी कैलाश श्रीवास्तव के लिए संपादक प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी)' (ट्रस्टि जन संगठन) द्वारा निर्दलीय प्रेस भोपाल द्वारा जेपन ऑफसेट के सहकार्य से मुद्रित तथा एफ-116/7 शिवाजी नगर,भोपाल -462016 से प्रकाशित

काश चार्वाक दर्शन आज तक फलता-फूलता?

अगर प्राचीन भारत की एक ऐसी दार्शनिक परंपरा, जो आत्मा, पुनर्जन्म, कर्मफल और परलोक जैसी मान्यताओं पर सवाल उठाती थी, समय के साथ समाप्त न हुई होती...अगर चार्वाक दर्शन की मूल पुस्तके आज भी हमारे पास होतीं...

अगर हजारों वर्षों तक इसके विद्वान लगातार लिखते, बहस करते और अपनी विचारधारा को आगे बढ़ाते...तो क्या आज का भारत और दुनिया थोड़ी अलग होती?

चार्वाक दर्शन को भारतीय दर्शन की सबसे प्रसिद्ध भौतिकवादी परंपराओं में गिना जाता है। इसे लोकायत भी कहा जाता है जो केवल भौतिक जगत को ही सत्य मानता है। इसकी मूल रचनाएँ आज उपलब्ध नहीं हैं और इसके विचार हमें मुख्यतः बाद के विरोधी या आलोचनात्मक ग्रंथों के माध्यम से पता चलते हैं।

चार्वाक दर्शन इस मान्यता पर आधारित है कि मृत्यु के समय मनुष्य का नाश हो जाता है। चार्वाक कर्म के सिद्धांत में विश्वास नहीं करते और इसलिए मृत्यु के बाद पुनर्जन्म की धारणा को अस्वीकार करते हैं। चार्वाक वर्तमान क्षण में जीते हैं। वे मनुष्यों को यह उपदेश देते हैं कि वे भविष्य में किसी बड़े सुख की आशा में वर्तमान सुख की उपेक्षा न करें।

चार्वाक परंपरा का सबसे बड़ा जोर था— इस संसार और प्रत्यक्ष अनुभव पर। उसके लिए मनुष्य का जीवन किसी अदृश्य दुनिया की तैयारी मात्र नहीं था। यहीं से कल्पना शुरू होती है।अगर चार्वाक की किताबें बच गई होतीं...! आज हमारे पास वे ग्रंथ होते जिनमें चार्वाक दार्शनिकों ने स्वयं अपने विचार लिखे होते। तब हमें केवल उनके विरोधियों द्वारा बताए गए विचारों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। शायद हमें पता चलता कि चार्वाक दर्शन वास्तव में कितना विस्तृत

था। क्या उसके भीतर अलग-अलग शाखाएँ थीं? क्या समय के साथ उसके विचार बदले थे? क्या उसके दार्शनिकों ने नैतिकता, राजनीति, समाज और राज्य पर भी व्यवस्थित विचार दिए थे? इन सवालों के जवाब शायद आज हमारे पास होते शायद भारतीय दर्शन का इतिहास भी अलग दिखाई देता।

आज जब भारतीय दर्शन की बात होती है, तो अक्सर वेदांत, सांख्य, योग, न्याय, बौद्ध और जैन दर्शन प्रमुखता से सामने आते हैं लेकिन अगर चार्वाक की परंपरा लगातार बची रहती, तो भारतीय दर्शन की तस्वीर में भौतिकवाद और संशयवाद की भूमिका कहीं ज्यादा स्पष्ट दिखाई देती।

कल्पना कीजिए कि किसी प्राचीन विश्वविद्यालय में एक तरफ वेदांत के विद्वान आत्मा पर बहस कर रहे हों और दूसरी तरफ चार्वाक दार्शनिक कह रहे हों— पहले यह साबित कीजिए कि आत्मा वास्तव में अस्तित्व में है। बहस शायद सदियों तक चलती और शायद यही भारतीय बौद्धिक परंपरा को और अधिक विविध बनाती। धर्म और तर्क के बीच बहस कैसी होती अगर चार्वाक विचारधारा मजबूत बनी रहती, और धार्मिक विश्वासों के सामने एक संगठित दार्शनिक चुनौती लगातार मौजूद रहती? यज्ञ क्यों किया जाए? दान का फल क्या है? क्या कर्म का कोई अदृश्य परिणाम होता है? क्या मृत्यु के बाद चेतना बचती है? क्या मनुष्य को स्वर्ग की उम्मीद में अच्छा जीवन जीना चाहिए?

ऐसे सवाल केवल व्यक्तिगत बहस तक सीमित नहीं रहते, बल्कि दर्शन और सार्वजनिक जीवन का हिस्सा बने रहते लेकिन यहाँ एक महत्वपूर्ण बात है। चार्वाक



गौतम

के जीवित रहने का अर्थ यह नहीं होता कि भारत नास्तिक देश बन जाता। यह निष्कर्ष बहुत सरल होगा।

भारत में धार्मिक और आध्यात्मिक परंपराएँ इतनी विविध और मजबूत थीं कि केवल एक दर्शन के अस्तित्व से वे समाप्त नहीं हो जातीं। संभवतः इसके बजाय एक मजबूत दार्शनिक प्रतिस्पर्धा विकसित होती और शायद विज्ञान पर भी असर पड़ता? यहाँ हमें अनुमान को तथ्य नहीं बनाना चाहिए।

यह कहना गलत होगा कि चार्वाक बचा रहता तो भारत निश्चित रूप से आधुनिक विज्ञान में दुनिया का नेता बन जाता लेकिन एक संभावना जरूर बनती। चार्वाक भौतिक जगत से परे किसी भी आध्यात्मिक वास्तविकता में विश्वास नहीं करते, इसलिए यह तर्कसंगत है कि वे ईश्वर, धर्म और मृत्यु के बाद जीवन की पारंपरिक अवधारणाओं को शुद्ध कल्पना, सनकी दिमाग की सरासर कल्पना मानते हैं।

यदि प्रत्यक्ष प्रमाण, निरीक्षण और तर्क पर आधारित दार्शनिक बहस की परंपरा लगातार संस्थागत रूप से मजबूत होती, तो प्राकृतिक दुनिया को समझने के लिए कुछ प्रकार की बौद्धिक संस्कृति को अतिरिक्त समर्थन मिल सकता था लेकिन विज्ञान केवल नास्तिकता से पैदा नहीं होता। वे पदार्थ के दर्शन को मानते हैं, जिसका अर्थ है पदार्थ ही सब कुछ है।

चूँकि बोध ही ज्ञान का एकमात्र विश्वसनीय स्रोत है, इसलिए इसके माध्यम से जो कुछ भी ज्ञात होता है, वही वास्तविक है और पदार्थ ही एकमात्र वास्तविकता बन जाता है। उसके लिए गणित, प्रयोग, संस्थाएँ, तकनीक, शिक्षा और आर्थिक-सामाजिक

परिस्थितियाँ भी जरूरी होती हैं। इसलिए चार्वाक को आधुनिक विज्ञान का सीधा पूर्वज कहना भी इतिहास को जरूरत से ज्यादा सरल बनाना होगा।

सबसे बड़ा बदलाव शायद हमारी सोच में होता अगर चार्वाक परंपरा आज तक जीवित रहती, तो शायद भारतीय समाज में एक विचार और मजबूत होता— किसी बात को केवल इसलिए मत मानो क्योंकि वह बहुत पुरानी है। लेकिन इसका दूसरा पहलू भी होता।

अगर हर चीज को केवल प्रत्यक्ष अनुभव की कसौटी पर परखा जाता, तो ऐसी कई मान्यताएँ और दार्शनिक अवधारणाएँ भी चुनौती के घेरे में आतीं जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से साबित करना कठिन है।

यानी चार्वाक का जीवित रहना केवल फायदे ही नहीं लाता। यह भारतीय समाज में और अधिक बहस, टकराव और वैचारिक संघर्ष भी पैदा कर सकता था और शायद यही इसकी सबसे बड़ी ऐतिहासिक दिलचस्पी होती।

चार्वाक की सबसे बड़ी विरासत शायद यह नहीं होती कि उसने लोगों को नास्तिक बनाया बल्कि यह होती कि उसने लोगों को बार-बार पूछने की आदत दी— तुम जो कह रहे हो, उसका प्रमाण क्या है? आज चार्वाक की मूल पुस्तके हमारे पास नहीं हैं लेकिन उनका सवाल अभी भी जिंदा है। अगर चार्वाक दर्शन नष्ट न हुआ होता, तो शायद भारत में आस्था और तर्क की लड़ाई खत्म नहीं होती... बल्कि वह आज भी हमारे विश्वविद्यालयों, अदालतों, संसदों और समाज में खुलकर चल रही होती। और शायद यही किसी दर्शन के जीवित रहने का सबसे बड़ा प्रमाण होता— उसका जवाब नहीं, बल्कि उसके सवालों का जिंदा रहना।

-हाथरस

गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों को विद्यार्थियों ने चित्रों में उकेरा



निर्दलीय संवाद

भोपाल । गांधी भवन न्यास द्वारा गांधी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित 'आओ जानें गांधी को' कार्यक्रम में आज चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता की थीम गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम रखी गई थी। इसमें भोपाल के विभिन्न विद्यालयों से आए लगभग 120 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों को अपनी कल्पनाओं के रंगों से कागज पर उकेरा।

विद्यार्थियों ने अपने चित्रों के माध्यम से गांधी जी के रचनात्मक कार्यों, स्वावलंबन, स्वच्छता, ग्राम विकास, खादी एवं सामाजिक सद्भाव जैसे विषयों को अभिव्यक्त किया। प्रतियोगिता में बच्चों की कल्पनाशीलता, कलात्मक प्रतिभा और गांधी विचारों के प्रति उनकी समझ देखने को मिली।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर उपस्थित रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों पर विस्तार से बातचीत की। उन्होंने कहा कि गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम केवल किसी एक समय के लिए नहीं थे, बल्कि वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का माध्यम थे। विद्यार्थियों को इन विचारों को समझकर अपने जीवन और समाज में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल के सदस्य एवं पर्यवेक्षक के रूप में जनजातीय संग्रहालय के वरिष्ठ कलाकार बी आर सातपुते, स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर की प्रोफेसर शिखा पाटीदार तथा सरोजिनी नायडू महाविद्यालय के प्रोफेसर असलम उपस्थित रहे। इस अवसर पर गांधी भवन न्यास के वरिष्ठ न्यासी महेश सक्सेना, वरिष्ठ समाजसेवी रघुराज सिंह, युवा साहित्यकार मानस भारद्वाज तथा गांधी विचारक एवं लेखक पराग माण्डले भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकगण ने भी सहभागिता की।

गांधी भवन न्यास द्वारा आयोजित कार्यक्रम के अंतर्गत



विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है।

इन प्रतियोगिताओं का उद्देश्य नई पीढ़ी को गांधी जी के जीवन, विचारों और रचनात्मक कार्यक्रमों से जोड़ना तथा उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करना है।

अच्छे जीवन के लिए बेहद जरूरी है अच्छी नींद

अच्छी नींद, स्वस्थ दिमाग

और खुशहाल जिन्दगी, इन तीनों का आपस में गहरा सम्बन्ध है। अच्छे जीवन के लिए अच्छी नींद बेहद जरूरी है।

बावजूद इसके आज लम्बे समय तक काम करने, पारिवारिक, सामाजिक या स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण लोग सोने के सामान्य घंटों से कम सो रहे हैं या कम सो पा रहे हैं। नतीजतन पर्याप्त नींद न लेने के कारण कार्य के दौरान या दिन-भर सुस्ती आती रहती है। कम नींद से दिमाग को आराम नहीं मिल पाता। इससे तनाव बढ़ता है, जिसका सीधा असर कार्य-क्षमता पर पड़ता है।

परिणाम स्वरूप गुस्सा, चिड़चिड़ापन और अवसाद (डिप्रेशन) आदि या उन जैसी समस्याएँ शुरू हो जाती हैं। महज एक दिन की कम नींद से भी रक्त में शक्कर की मात्रा बढ़ जाती है और लम्बे समय तक नींद की कमी से मधुमेह रोग होने का खतरा बढ़ता जाता है। नींद ही जब अधूरी रहेगी, तो सेहत कैसे पूरी होगी? अतः सेहतमंद होने के लिए नींद पूरी होना जरूरी है।

इस विषय में चिकित्सक कहते हैं कि हमारे शरीर का एक चक्र होता है, जिसके अनुसार हमारा शरीर स्वतः ही चलता रहता है। इसके लिए ध्यान देने योग्य बात यह है कि हमें समय पर सोने

मधु अजमेरा

तथा समय पर उठने की आदत बनानी चाहिए और उसे अमल में लाने का प्रयास करना चाहिए, ऐसा करने से धीरे-धीरे यह आदत में आ जाता है।

सोने से पहले कॉफी व चाय आदि का सेवन न करें। सोने से पहले चहलकदमी फायदेमंद होती है। सोने के कमरे का माहौल आरामदायक एवं शान्त होना चाहिए। सोने से पहले सही इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बन्द कर देना चाहिए। सन्तुलित व पौष्टिक आहार लेना चाहिए एवं देर रात्रि भोजन से बचना चाहिए।

हल्का-फुल्का व्यायाम, शव आसन एवं ध्यान नींद में सहायक होते हैं। शान्त मन से अपनी श्वासों पर ध्यान केंद्रित करते हुए मन में दोहराना चाहिए- मुझे नींद आ रही है..... मुझे नींद आ रही है। ऐसा करने से हमारे अवचेतन मन को संदेश पहुँचता है कि नींद आ रही है और हमें नींद आ जाती है। चिकित्सकों का मानना है कि नींद की दवाई के आदी होने की बजाय यह प्रक्रिया ज्यादा बेहतर और प्रभावशाली है। हे परमेश्वर जीवन जीने के लिए भोजन और पानी जितना आवश्यक है, उतनी ही नींद भी जरूरी है। पर्याप्त नींद जीवन को खुशहाल बनाने में सहायक है। लीवाजा अनिद्रा को हमें नजरअंदाज नहीं करते हुए उसके लिए आवश्यक उपाय करना चाहिए। - ग्वालियर

क्या बेटों को जन्म देना बंद कर देगी नारी?

वर्तमान में किसी भी न्यूज चैनल में देखो या फिर न्यूजपेपर को देखें, अखबारों में खबरें महिलाओं के ऊपर शारीरिक अत्याचार से भरी हुई हैं। कहीं नाबालिक बच्चों के साथ कहीं बुजुर्ग महिला के साथ अमानवीय अत्याचार किया जाता रहा है। यह सारी घटनाएँ सोचने पर मजबूर कर देती हैं, क्या महिला होना पाप है?

महिला को महिला होने की इतनी दर्दनाक सजा आखिर क्यों दी जा रही है?

मैं एक महिला हूँ और महिला के दर्द, तकलीफ हो महिला से बेहतर कोई नहीं समझ सकता। मैं जब इस तरह की घटनाएँ पढ़ती हूँ तो, मेरा नारी मन आहत हो जाता है महिला हर जगह असुरक्षित है, घर, परिवार में सड़कों, कार्य स्थल पर यह असुरक्षित क्यों है इसका मुख्य कारण क्या है? क्या पुरुष इसके लिए उत्तरदायी है? मैं सोच रही हूँ कहीं ऐसा ना हो इन अत्याचारों से त्रस्त होकर, घबराकर कोई नारी पुरुष को जन्म देना ही बंद ना कर दे। पुरुष कितना भी शक्तिशाली क्यों ना हो



पूनम श्रीवास्तव

उसे मां के गर्भ से ही जन्म लेना होता है।

जिस कोख से उसका जन्म होता है उसी कोख के ऊपर अत्याचार, अगर नारी समाज इस अत्याचारों से हार मान जाएगी तो फिर शायद किसी पुरुष का जन्म इस धरती पर नहीं होगा और यह धरती पुरुष विहीन हो जाएगी।

सृष्टि के निर्माण के लिए नारी और पुरुष दोनों का होना आवश्यक है। यही

संसार का नियम है की दोनों समान भाव से, समान रूप से सहभागी हैं इस सृष्टि के लिए इस प्रकृति के लिए लेकिन यदि नारियों पर पैदा होने से लेकर वृद्ध होने तक शारीरिक, मानसिक अत्याचार किया जाता रहेगा उनकी हत्या की जाती रहेगी उनके शरीर को गिद्धों की तरह नोंचा जाएगा तो फिर यह सहभागिता शायद वह ना निभा पाए।

जिस तरह कोख में बेटियों की हत्याएँ की जाती हैं कहीं ऐसा ना हो कोख में बेटों की हत्या की जाने लगे। माँए बेटों को जन्म देना बंद कर दें यही हालात रहे तो वह दिन दूर नहीं है।

-भोपाल